करतार की सुंदर कृति कृष्ण को देखें...

-ब्र.कु. नलिनी दीदी,घाटकोपर,मुम्बई

आज भी श्रीकृष्ण की आरती करते हुए मनुष्य भाव-विभोर हो जाते हैं। श्रीकृष्ण को इतना उच्च मानते हैं कि उस पर वारी जाते हैं और 'कृष्ण अर्पण' कह श्रीकृष्ण की मूर्ति पर स्वेच्छा से धन न्यौछावर करते हैं। वैसे तो संसार में यह रिवाज़ है कि छोटी आयु के बच्चे बड़ों के आगे माथा झुकाते हैं परन्तु श्रीकृष्ण के जन्म से ही उन्हें सभी बाल, वृद्ध और 'महात्मा' भी नमस्कार करते या अष्टांग प्रणाम करते हैं। श्रीकृष्ण बचपन से ही, जन्म से ही, इतने महान कैसे बने?

इस संसार में यदि कोई बहुत सुंदर होता है, तो लोग कहते हैं `इसे तो भगवान ने अपने हाथों से रचा है।' कई ऐसा भी कहते हैं `इसे तो विधि ने खूब गढ़ा है।' कई ऐसा भी कहते हैं, `ब्रह्मा जी अथवा विश्वकर्मा ने तो इस पर अपनी सारी कारीगरी लगा दी है।' कई ऐसा भी कहते हैं, `यह तो किसी न्यारे ही तत्वों से बना है।' ऐसे ही न्यारे तत्वों से विधाता ने रचा था श्रीकृष्ण को। अतः श्रीकृष्ण तो वास्तव में ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है। जैसे बालक को देखकर पिता की याद आती है, किसी सुंदर कृति को देखकर कर्ता की याद आती है, वैसे ही श्रीकृष्ण की मूर्ति को देखकर उसके रचयिता स्वयं भगवान शिव की याद आती है, परंतु आज श्रीकृष्ण की महानता को न जानने के कारण भारतवासियों ने स्वयं ही अपने पूज्य देवताओं पर निराधार मिथ्या कलंक लगाये हैं। जैसे, श्रीकृष्ण की 16108 रानियाँ थीं, श्रीकृष्ण घर-घर जाकर माखन चुराता था, श्रीकष्ण ने गोपियों के चीर हरण किये, श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध कराया आदि आदि... ऐसे मिथ्या आरोप लगाकर श्रीकृष्ण की महानता को कम कर दिया जाता है। कहावत प्रसिद्ध है कि ज्ञान द्वारा नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद प्राप्त होता है, परंतु आज लोगों को यह मालूम नहीं है कि श्रीकृष्ण ने वह देव पद कैसे प्राप्त किया था? किसी को राज्य-भाग्य या धन-धान्य या तो दान-पुण्य करने से या यज्ञ करने से या युद्ध द्वारा शत्रु राजा को जीतने से ही प्राप्त होते, परन्तु श्रीकृष्ण को जो राज्य भाग्य अधवा धन-धान्य प्राप्त था, कोई साधारण, विनाशी न था बल्कि अलौकिक अखण्ड तथा सम्पूर्ण और पवित्र था, तभी तो दूसरे राजा-महाराजा भी श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण की भक्ति पूजा करते हैं। प्रश्न उठता है कि श्रीकृष्ण ने कौन सा यज्ञ, कौन सा दान-पुण्य अथवा कौन सा युद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप उनको ऐसा सर्वोत्तम, दो ताजधारी पूज्य देव पद प्राप्त हुआ, जिसका आज तक गायन-वंदन होता है। परमपिता शिव परमात्मा ने अब इसके विषय में समझाया है कि श्रीकृष्ण ने प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में ईश्वरीय ज्ञान धारण करके `ज्ञान यज्ञ' रचा था। उन्होंने अपना तन, मन और धन सम्पूर्ण रीति से उस यज्ञार्थ `ईश्वरार्पण' कर दिया था। उन्होंने अपना जीवन मनुष्य मात्र को ज्ञान-दान देने में लगा दिया था और जन मन को परमपिता परमात्मा से योग युक्त करने तथा उन्हें सदाचारी बनाने में व्यतीत किया था। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार जिनका उस समय समस्त भूमण्डल पर अखण्ड राज्य को ज्ञान-तलवार तथा योग के कवच के प्रयोग से जीता था। इसी के फलस्वरूप उन्होंने भविष्य में सृष्टि के पवित्र हो जाने पर सतयुग के आरंभ में भी कृष्ण के रूप में अटल, अखण्ड और अति सुखकारी तथा दो ताजधारी स्वर्गिक स्वराज्य तथा पूज्य देव पद प्राप्त किया था।

आज लोग जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं, तो बिजली के सैंकड़ों बल्ब जगाकर उजाला करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु आज आत्मा रूपी बल्ब तो फ्यूज़ हो चुका है। आज बाहर तो रोशनी की जाती है, परन्तु स्वयं आत्मा रूपी चिराग के तले अंधेरा है और उस अंधेरे में विकार रूपी चोर छिपे बैठे हैं। अतः आज आवश्यकता है नव चेतन की, अपने जीवन के नव निर्माण की, अपने प्राण में नव प्राण की, अपने घर-गृहस्थ में नये विधि विधान की, नये एवं उज्जवल विचारों की, जीवन में नई उमंग, नई तरंग पैदा करने वाली एक नई तान की। तब यहां नई ज़मीन और नया इंसान बनेगा, नई दुनिया और नया जहान बनेगा। परंतु आज मनुष्य को यह भी मालूम न होने के कारण कि वर्तमान `समय' कौन सा है तथा भविष्य में कौन सा समय आनेवाला है वे अज्ञान निद्रा में सोये पड़े हैं तथा पुरुषार्थहीन हैं।

अब यदि उन्हें इस सत्य की जानकारी हो जाए कि वर्तमान समय ही कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम समय है, जबकि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुनः गीता ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और निकट भविष्य में श्री कृष्ण का सच्चा, दैवी स्वराज्य शुरु होने वाला है, तो भारत की हज़ारों लाखों, नर-नारियाँ अपने जीवन को पावन बनाकर, उस स्वर्णिम दुनिया में जाने के पुरुषार्थ में लग जायेंगे।

बहादुरगढ़-पालिका कॉलोनी। शहीदी पार्क में आयोजित सामूहिक योग कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. विनीता, ब्र.कु. रेनू, ब्र.कु. अमृता, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. रुबी, ब्र.कु. दीपा व ब्र.कु. बहन भाई।

सोनीपत। गौशाला के प्रधान व पंचायती सेक्रेट्री अशोक खत्री द्वारा दिवंगत डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए आयोजित सर्व धर्म श्रद्धांजली सभा में उपस्थित हैं ब्र.कु. प्रमोद व अन्य धर्म प्रमुख।

जयपुर-राजापार्क। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् परमात्म स्मृति में राज. के शिक्षा मंत्री कालीचरण सर्राफ, ब्र.कु. पूनम व अन्य।

माउण्ट आबू। स्वामी हरिप्रसाद जी एवं स्वामी मुक्तिनित्यानंदजी, स्वामीनारायण मंदिर,अमरेली गुजरात को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमेश शाह।

पोखरा-नेपाल। योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए न्यायमूर्ति डम्बर बहादुर शाही, ब्र.कु. परनीता, ब्र.कु. गोमा, समाजसेवी सोभियत अधिकारी व अन्य।

सुन्दर नगर-हि.प्र.। 'खुशनुमा जीवन जीने की कला' कार्यक्रम के पश्चात् संसदीय सचिव सोहनलाल ठाकुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला। साथ हैं ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू व ब्र.कु. शिखा।

भरतपुर-राज.। सांसद बहादुर सिंह का सेवाकेन्द्र में आने पर गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. अमर। साथ हैं भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष अरविन्दपाल सिंह, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. जयसिंह व अन्य।

रुड़की। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष दिनेश कौशिक व भारतीय किसान यूनियन के गढ़वाल मंडल के अध्यक्ष संजय चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना,हरिद्वार।